ऐसे होते हैं निराकार 'शिव' प्रकट

शिव पुराण में भी लिखा है कि भगवान शिव ने कहा - 'मैं ब्रह्मा जी के ललाट से प्रकट होऊंगा।' आगे लिखा है कि - 'इस कथन के अनुसार समस्त संसार पर अनुग्रह करने के लिए शिव ब्रह्मा जी के ललाट से प्रकट हुए और उनका नाम 'रूद्र' हुआ।'

शिव पुराण में यह भी लिखा है कि 'जब ब्रह्मा जी द्वारा सतयुगी सृष्टि रचने का कार्य तीव्र गति से नहीं हुआ और इस कारण वह निरुत्साहित थे, **तब शिव ने ब्रह्मा जी की काया में प्रवेश किया, ब्रह्मा जी को पुनर्जीवित किया और उनके मुख द्वारा सृष्टि रची।**' शिव पुराण में अनेक बार यह उल्लेख आया है कि भगवान शिव ने पहले प्रजापिता ब्रह्मा को रचा और फिर उन द्वारा सतयुगी सृष्टि को रचा। **इस पौराणिक उल्लेख का भी यह भाव है कि परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के मस्तिष्क 'ललाट' में अवतरित हुए और उनके मुख द्वारा ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा देकर उन्होंने संसार का कल्याण किया।** महाभारत में लिखा है कि भगवान ने ब्रह्मा के तन में प्रविष्ट होकर ज्ञान दिया और

हाँ, मैं हुआ ब्रह्मा के ललाट से प्रकट

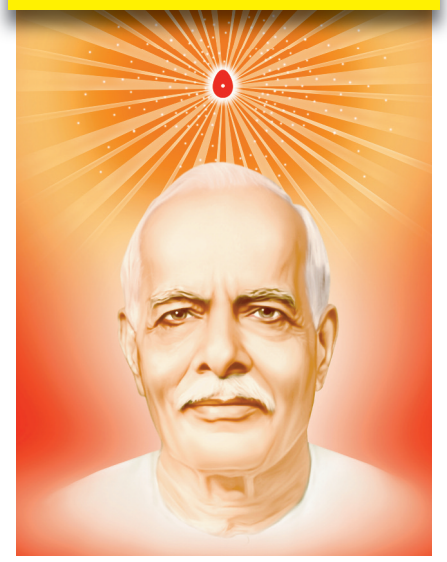

सतयुग की पुनः स्थापना की।

स्वयं गीता में भी लिखा है कि मैंने पहले यह ज्ञान विवस्वान को दिया था। सोचने की बात है कि सृष्टि के आदि में वह आदिम वक्ता कौन था? ब्रह्मा ही को तो 'आदि देव' और शिव ही को 'स्वयंभू अथवा आदि नाथ' कहा गया है। ध्यान देने की बात है कि आद्य शंकराचार्य ने भी अपने भाष्य में इस श्लोक की व्याख्या करते हुए कहा है कि भगवान ने नई सृष्टि रचने के समय 'सर्ग' ही यह ज्ञान दिया था तथा योग सिखाया था। स्पष्ट है कि तब ज्योतिस्वरूप परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ही यह ज्ञान दिया होगा। इसलिये ही भारत के प्रायः सभी प्राचीन धर्म-ग्रन्थों में ज्ञान के उद्गम के साथ ब्रह्मा और शिव ही का नाम जुड़ा हुआ है। स्वयं महाभारत में भी लिखा है कि भगवान ने नई सृष्टि की रचना के लिए ब्रह्मा की बुद्धि में प्रवेश किया। **परंतु चूंकि बाद में वैष्णवों ने महाभारत को वैष्णव ग्रन्थ बनाने के यत्न किये, इसलिए उन्होंने लिख दिया कि नारायण ने ब्रह्मा की बुद्धि में प्रवेश किया।** परंतु इस श्लोक में जो 'प्रभुख्यतः' शब्द हैं, वे ही इस बात को सिद्ध करते हैं कि ज्योतिस्वरूप, अविनाशी परमात्मा ही के प्रवेश होने के बारे में कहा गया है। नारायण तो स्वयं ही विवस्वान थे, अर्थात् सूर्यवंशी थे। गीता ज्ञान जानने वालों में ब्रह्मा ही को भागवत् आदि ग्रन्थों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। तब अवश्य ही ब्रह्मा को परमात्मा ही ने यह ज्ञान दिया होगा और उन्हें माध्यम बनाकर अन्य आत्माओं को भी गीता ज्ञान सुनाया होगा।

गीता में है सही कर्म करने की कहानी

श्रीमद्भगवद् गीता को लेकर आज भी बहस जारी है कि इसके असली जन्मदाता कौन हैं? यह भगवानुवाच है या श्रीकृष्णवाच। तर्क यह कहता है कि पूरे विश्व में लोग गीता को सम्मान देते हैं। और-और धर्म ग्रन्थों के लिए कहते भी हैं कि ये मुस्लिम धर्म का है, ये सिक्ख धर्म का है, ये ईसाई धर्म का है। **लेकिन श्रीमद्भगवद् गीता को सबसे ज़्यादा पढ़ा जाता है। उसका रूपांतरण अन्य भाषा में सबसे ज़्यादा है, इसका कुछ तो कारण होगा। क्योंकि और धर्म पुस्तकों में उस धर्म की ही चर्चा है। लेकिन श्रीमद्भगवद् गीता में मनुष्य के कर्म की कहानी है।** उसमें निष्पक्ष 'न्यूट्रल' भाव है। क्योंकि कर्म सभी को करना है। इसलिए उस कर्म की सही व्याख्या इस महान पुस्तक में है। और न्यूट्रल कर्म सिर्फ परमात्मा ही सिखा सकता है, जो निष्काम है, जिसको फल की इच्छा नहीं है। जबकि किसी भी देहधारी मनुष्य रूपी देवता को लोग एक धर्म से जोड़कर देखेंगे ही, क्योंकि वह सीमित है। वैसे भी आज सभी अधर्म में धर्म की बात कर रहे हैं। जहाँ सभी की बुद्धि मलिन है, संकीर्ण है, वहाँ उस निराकार परमात्मा को समझना मुश्किल है, उसे समझने

के लिए दिव्य बुद्धि चाहिए। यहां हम आपको स्पष्ट करना चाहेंगे कि **गीता के तीसरे अध्याय में भगवान और अर्जुन के संवाद में भगवान कहते है – 'हे अर्जुन! तुम मुझे नहीं देख सकते, न ही जान सकते। मुझे इन चर्म चक्षुओं से नहीं देखा जा सकता, ना ही पहचाना जा सकता है। मुझे तो दिव्य चक्षुओं से ही देखा जा सकता है।'** श्रीकृष्ण तो सामने ही थे, फिर अर्जुन कृष्ण को कैसे नहीं देख सकता था! इससे स्पष्ट होता है कि ये साकार की बात नहीं, निराकार ज्योति स्वरूप परमात्मा की बात है, जो अजन्मा हैं, मनुष्य की तरह जन्म नहीं लेते, बल्कि परकाया प्रवेश कर गीता ज्ञान देते हैं। और श्रीमद्भगवद् गीता में ही भगवानुवाच कहा गया है, बाकी कोई शास्त्र में नहीं, इसका अर्थ कि निराकार परमात्मा शिव ने ही गीता ज्ञान दिया।

गीता, जो कि परमात्मा द्वारा सुनाए गए महावाक्यों का संकलन ही है, वही हमें गृहस्थ जीवन जीने में मदद कर सकती है। उसी को सभी ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से माना है। आपसे हमारा नम्र निवेदन है कि उसे उसी रूप से जानने के लिए आप बस तीन महीने का एक संकल्प लें और इसी के बारे में विचार करें, तो आप इस निष्कर्ष बिन्दु पर पहुंचेंगे कि परमात्मा तो केवल निराकार शिव ही हैं और वही हैं जो हमें दिव्य नेत्र प्रदान कर अपने और इस सृष्टि चक्र के बारे में बताते हैं।

परमात्मा आकर क्या करते जो मनुष्य नहीं कर सकता

आज के परिदृश्य में अधिकतर मनुष्य नकारात्मक विचारों का टोकरा सिर पर लेकर ही ज़िन्दगी को ढ़ोता हुआ चल रहा है। आप ही बताइये कि आप बीस किलो का वज़न सिर पर लिये हुए चलोगे तो थकोगे नहीं! और जब थकते हो, तो चिल्लाते भी हो। फिर पुकारते भी हो और इससे छूटने के लिए कई हथकंडे भी अपनाते हो। क्योंकि इस बोझिल भरी ज़िन्दगी से आहत हैं।

हमने सबकुछ तो हासिल किया, किन्तु इस बोझ से छूटने का न तो ज्ञान है और न तौर-तरीका। मनुष्य बोझ के साथ जुड़ा इसलिए था या शादी इसलिए की, कि हम खुशी के साथ पारिवारिक जीवन का निर्वाह करेंगे। लेकिन जीवन में इन सम्बंधों के आने के बाद हम बोझिल इसलिए हो गए, क्योंकि हम सबको बोझ समझने लगे, जबकि ये हमें पता होना चाहिए कि सबका अपना-अपना भाग्य और कर्म है। हम रहें ना रहें, कार्य चला है और चलता रहेगा। ये ज्ञान

हमको परमात्मा आकर देते हैं। अब इस दुःख के चक्रव्यूह से छूटने के लिए परमात्मा आपको सही मार्ग और सही ज्ञान देते हैं और कैसे बोझिल जीवन को आसान बनाकर सुकून भरा जीवन जिया जाये, उसका तरीका भी बताते हैं। जो मनुष्य खुद उलझा हुआ हो, वो सबको उलझा देगा, लेकिन परमात्मा सुलझा हुआ है, इसलिए वो सब सुलझा देंगे। आप किसी संत के पास जाओ, महात्माओं के भाषण सुनो, इसमें कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन वहां आपको मूल्य आधारित शिक्षा मिलती है, मुक्ति का मार्ग नहीं मिलता। चाहो तो कर के देख लो। आप जाते ही थोड़े देर के लिए, और फिर घर आते ही वही सारी उलझन, वही चिंता और वही सोच। तो फायदा क्या हुआ सत्संग सुनने का जब मैं उलझन से निजात न पा पाऊँ !

तो हम आपको यही कहना चाहेंगे कि उस महाज्योति, उस नूर को पहचानो जो हमारे अंतरतम के प्रकाश को बढ़ा देगा, हमें जागृति दिलायेगा। इसमें दो स्थितियां बनेंगी, एक तो आप अपने लिये बोझ को समझदारी से छोड़ दो या फिर समय आपको ज़बरदस्ती इसे छोड़ने पर मजबूर कर देगा। और मजबूरी में छोड़ेंगे तो दुःख ही मिलेगा और समझदारी से छोड़ेंगे तो आप सुख पायेंगे। ये है परमात्मा की दी हुई सीख। ये कार्य सिर्फ परमात्मा कर सकते हैं, कोई मनुष्य नहीं कर सकता।

परमात्मा द्वारा परिवर्तन के प्रभाव का प्रमाण यहाँ पर ही...

हमारी शुभभावना, जन-जन तक पहुँचे शिव संदेश

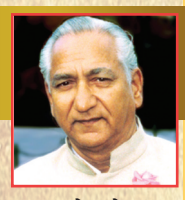

हम पिछले आठ दशकों से निराकार की पालना में साकार माध्यम से पल रहे हैं। अभी तक हमने जो सुख शांति का अनुभव किया, बड़ी-बड़ी परिस्थितियों के बीच में रहते हुए संतुष्टता को शिरोधार्य किया, ये सब उस परमात्मा के द्वारा ही संभव हुआ। हम चाहेंगे कि आप सभी परमात्मा से महाशिवरात्रि के पर्व पर वो ही सब प्राप्त करें। जन-जन तक परमात्म अवतरण का संदेश पहुंचे और आप सभी का जीवन परमात्मा से जुड़कर सत्यम् शिवम् सुंदरम बन जाये, यही हमारी शुभकामना है।

- राजयोगी ब्रह्माकुमार निर्वैर,महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़।

परमात्म कार्य का प्रत्यक्ष प्रमाण इस संस्थान में

यहाँ आते ही मेरा अनुभव ये रहा कि मुझे एक सशक्त आध्यात्मिक फीलिंग हुई। यहां का प्रकम्पन मुझे शांति प्रदान कर रहा था। जीवन में बड़ा काम करने के लिए बड़ा दिल होना ज़रूरी है। छोटे दिल का व्यक्ति बड़ा काम नहीं कर सकता। और जिसका दिल जितना बड़ा होगा, वह उतना ही आध्यात्मिक होगा। ब्रह्माकुमारी संस्थान में दिल व मन को बड़ा करने की शिक्षा दी जाती है। संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी का कितना बड़ा दिल होगा जो इतने बड़े परिवार को सम्भाल कर रखा है। जो इतने बड़े परिवार को बनाकर विश्व के 146 देशों में भारत की आध्यात्मिकता को पहुंचाया है। मैं ये मानता हूँ कि जो काम सरकार नहीं कर सकती, वो ब्रह्माकुमारी संस्थान बखूबी कर रहा है। - माननीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह,भारत सरकार।

परमात्म शक्ति से होती स्व की चार्जिंग यहाँ

विश्वव्यापी संगठन ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा की जा रही सेवाएं मानव को सही दिशा में ले जा रही हैं। संसार को जिस शांति की ज़रूरत है, उस वातावरण का निर्माण यहां से हो रहा है। कम बोलो, धीरे बोलो, मीठा बोलो, ये शब्द यहां मंत्र की तरह कार्य करते हैं। पवित्रता आत्मा की मूल संपदा है। यहां से मन, बुद्धि और कर्मों को शांति के पथ पर ले जाने के लिए आध्यात्मिकता की शिक्षा दी जा रही है। संस्था की पवित्रता हर मानव को अध्यात्म से परिपूर्ण करने में मदद करती है। इस संस्था की हर गतिविधियां काबिले तारीफ हैं। हमें अर्जुन और श्रीकृष्ण के वास्तविक संवाद को समझने की ज़रूरत है, जिसका यहां पर स्पष्टीकरण हो रहा है। यहां पर परमात्म शक्ति से स्वयं को चार्ज करने के लिए स्व के अंदर आत्म शक्ति को जागृत करते हैं। - सुप्रीम कोर्ट के पूर्व चीफ जस्टिस दीपक मिश्रा।

रूहानी इल्म द्वारा बनाया जाता यहां जन्नती इंसान

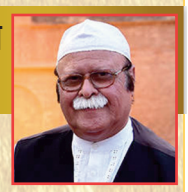

हम लोग जन्नत, हेवन के बारे में कल्पना करते हैं, लेकिन मैंने यहां ब्रह्माकुमारी संस्थान के माउण्ट आबू में जन्नत को देखा, जो राजयोग की उपज है। यहां प्रत्येक व्यक्ति के चेहरे पर शांति, प्रेम, सहयोग की भावना और रौनक देखने को मिली। यहां से दुनिया में इंसानियत का पैगाम दिया जा रहा है। राजयोग के रूहानी इल्म के द्वारा ही जन्नती इंसानी खूबियों को निखारा जा सकता है। - इमामिया एजुकेशन ट्रस्ट के अध्यक्ष नवाब ज़फर मीर अब्दुल्लाह।